बी.एच.आई.सी.-103 : भारत का इतिहास-II
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BHIC-103**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी. -103 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-2027**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) कुषाण कौन थे? कुषाणों की धार्मिक नीति का विश्लेषण कीजिए। 20

2) तमिलाकम् के राजनीतिक और सामाजिक संगठन का वर्णन कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) 400 बी.सी.ई. से 300 सी.ई. में नगरीकरण के पैटर्न पर चर्चा कीजिए। 10

4) भक्ति आन्दोलन पर एक निबन्ध लिखिए। 10

5) प्रारम्भिक मध्यकाल में वाणिज्य तथा व्यापार के पुनुरूत्थान पर चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) हर्ष की राजनैतिक गतिविधियाँ 6

7) विभिन्न शक्तियाँ में टकराव 6

8) दक्षिण भारत में शिल्प उत्पादन 6

9) तमिल साहित्य 6

10) नदियों का महत्व 6

1) कुषाण कौन थे? कुषाणों की धार्मिक नीति का विश्लेषण कीजिए। 20

उत्तर

परिचय

कुषाण प्राचीन भारत के इतिहास में उन शासकों में थे जिन्होंने मध्य एशिया, अफगानिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत को जोड़ने वाला विशाल राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र विकसित किया। उनका उद्भव यूएझी (युएझी) समूह की एक शाखा से माना जाता है, जो मध्य एशिया से बैक्ट्रिया की ओर आई थी। पहली से तीसरी शताब्दी ईस्वी के बीच कुषाण सत्ता ने उत्तर-पश्चिमी सीमांत, गांधार, पंजाब तथा गंगा-यमुना क्षेत्र के महत्वपूर्ण भागों को प्रभावित किया। विभिन्न जातीय, भाषायी और धार्मिक समुदायों के बीच शासन चलाना उनकी धार्मिक नीति की प्रमुख ऐतिहासिक परिस्थिति थी।

कुषाणों का उदय तथा प्रमुख शासक

चीनी विवरणों और मुद्राओं से ज्ञात होता है कि कुजुल कडफिसेस ने अलग-अलग यूएझी समूहों को संगठित कर कुषाण सत्ता को सुदृढ़ किया। विम कडफिसेस के समय साम्राज्य और व्यापारिक संबंधों का विस्तार हुआ तथा स्वर्णमुद्राओं का प्रचलन बढ़ा। कनिष्क को सबसे प्रभावशाली कुषाण शासकों में गिना जाता है। उसके बाद हुविष्क तथा वासुदेव प्रथम जैसे शासकों ने राजसत्ता को आगे बढ़ाया। शासन का आधार सैनिक शक्ति, कर, व्यापारिक मार्ग और स्थानीय अभिजात वर्ग से संबंध थे। इस तरह कुषाण राज्य केवल किसी एक धार्मिक या सांस्कृतिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व नहीं करता था।

अनेक धार्मिक परंपराओं को स्थान

कुषाण मुद्राओं पर यूनानी, ईरानी तथा भारतीय धार्मिक परंपराओं से जुड़े देवी-देवताओं के नाम और चित्र मिलते हैं। कहीं मिहिर अथवा मिथ्र, नाना और अर्दोख्शो जैसे ईरानी-संबद्ध रूप हैं, तो कहीं ओएशो को प्रायः शिव से संबद्ध माना जाता है। हुविष्क आदि की कुछ मुद्राओं में बौद्ध रूप भी मिलते हैं। इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि राजकीय प्रतीकों में अनेक धार्मिक परंपराओं को जगह दी गई।